पेरिस
६ जून, २००६

संदेश संख्या – ६३

भक्ति

शरीरस्थ चेतना में स्थित स्नायविक विकृति से उत्पन्न भावनात्मक एवं आत्मकेन्द्रित प्रक्रिया को ही साधारणतया भक्ति माना जाता है । यह चेतना सभी प्रकार के द्वैत, विभाजनों एवं विखण्डनों से मिलकर बनी है । इसका सबसे बड़ा खंड बड़ा घृणित एवं भयंकर है क्योंकि यह सर्वत्र 'मैं' के छद्म रूप में स्वयं को प्रस्तुत करता है। यह स्नायविक विकृति बन्दर–प्रजाति के हनुमान में नहीं है । इसी कारण प्राचीन ऋषियों ने हनुमान को यथार्थ भक्ति के पूर्ण प्रतीक के रूप में चुना जो स्वयं भगवत्ता भी है । बाइबिल का यह कथन कि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी ही छवि के अनुरूप बनाया है, एक सुन्दर, पवित्र एवं लोकप्रिय झूठ है जो मूर्ख मन को सन्तुष्टि प्रदान करता है तथा उसके आडम्बरी अहमन्यता को परिपु करता है। मनुष्य सोचता है कि वह श्रेष्ठतम प्रजाति है जबकि वास्तविकता में, यह सबसे निकृतम प्रजाति है । मानव सभ्यता की कहानी बताती है कि मनुष्य एकमात्र ऐसी प्रजाति है जो अपनी ही प्रजाति के लोगों का लाखों में शोषण और हत्या करती है । बाइबिल का ईश्वर तो सुरक्षा का चरम लोभ, असुरक्षा का चरम भय तथा उनके साथ की विश्वासपद्धतियों पर निर्भरता, चमत्कार की चाह एवं विभ्रांति का प्रतीक है ।

वस्तुतः यही स्थिति प्रत्येक धर्म के 'ईश्वर' की है । विभिन्न सम्प्रदाय, पंथ, अवतार, स्वामी, परमहंस, पोप, गिरी एवं गुरु अपनी आकषक एवं विचित्र वेश–भूषा, प्रतीकों, बाल एवं दाढ़ी के तरीकों तथा उपाधियों आदि के द्वारा वैसे ही 'ईश्वर' को चाहते हैं । यह सब मन ही है। ईश्वर जीवन है और वह जीवन के प्रत्येक स्पन्दन में है । वह मन से निर्मित कोई वस्तु या सिद्धांत नहीं है । एक जानवर या एक बन्दर भी ईश्वर ही है। क्यों नहीं ? कुछ समय से रिट्रीटों में हनुमान–पूजा होती है । यह पूजा बुल्गारिया, स्पेन, पूर्त्तगाल और इंग्लैंड में भी हुई। इंग्लैण्ड में, एक विद्वान और संवेदनशील बुद्धिजीवी (पी.एच.डी.) पूजा वेदी पर हनुमान के रूप में बैठे थे तथा पूजा पुरोहित (शिवेन्दु) और रिट्रीट में भाग लेने वाले सभी क्रियावानों द्वारा की गई । उनकी सम्प्रेषण की अच्छी क्षमता के कारण उनसे अनुरोध किया गया कि जब उनका शरीर हनुमान की अवस्था में था, उस समय जो भी हुआ उसे वे कृपया लिख दें। उन्होंने बताया कि उस अवस्था में जागृति में होने के बावजूद पूर्ण अनुभव शून्यता की स्थिति थी । फिर भी वे उस पूरी घटना को जितना सम्भव होगा, शब्दों में अभिव्यक्त करने का प्रयास करेंगे । बहुत निवेदन के बाद उन्होंने जो लिखा वह इस प्रकार है :

''हनुमान पूजा, डेवन, यूके, १३ मई २००६ । गुरुजी ने हनुमान का एक छोटा एवं रंगीन चित्र दिखाया । मैंने हनुमान के बैठने की मुद्रा को अच्छी तरह देखा । खुली हथेली वाला एक हाथ झुके हुए बाएँ पैर की जाँघ पर था और दूसरा हाथ आशीर्वाद देने की मुद्रा में उठे हुए दाहिने घुटने के ऊपर खड़ा था । वहाँ बनाई गयी बेदी पर मैं चढ़ गया तथा मेरा शरीर बिना प्रयास के ही हनुमान मुद्रा में बैठ गया । मेरी माँसपेशियाँ शिथिल हो गईं । मेरी आँखें बंद हो गयीं । कृष्णा दास मेरे कानों में गाने लगे ।

थोड़ी ही देर बाद मन गायब हो गया था । उसका विस्फोट हो चुका था। केवल इतना ही होश था कि गुरुजी हनुमान के सामने मन्त्र पढ़ रहे हैं और पूजा कर रहे हैं । शरीर के चारों ओर जो हो रहा था उसके साथ–साथ एक विराट् अस्तित्व का भी आभास हो रहा था । यह होश विस्तृत था, गहरा था किन्तु विचारों से खाली था ।

बाद में, गुरुजी ने हनुमान जी की उस कहानी का स्मरण दिलाया जिसमें लंका में पर्वत ले जाने हेतु हनुमान जी स्वयं हवा बन जाते हैं । तब मुझे ज्ञात हुआ कि उस समय के होश में जो कुछ भी हुआ उसके वर्णन के लिए 'हवा' ही एक मात्र शब्द है। अचानक सम्पूर्ण शरीर में मेरी चेतना हवा बन गई थी । वह चेतना गतिशील थी और उसका विस्तार हो रहा था । यह विराट् चेतना थी जो हर क्षण नयापन का प्रस्फुटन कर रही थी । अगले लगभग २० मिनटों में केवल तीन बार ही ऐसा हुआ जब चेतना को इस शरीर का बोध हुआ (जब चेतना और इस शरीर का तादात्म्य स्थापित हुआ) । प्रथम बार तब हुआ

जब गुरुजी ने पूजा समाप्त कर हनुमानजी का चरणस्पर्श किया । तब यद्यपि शरीर का बोध हुआ किन्तु चेतना रिक्त थी, उसमें शरीर के नाम का बोध नहीं था ।

नाम स्मरण करने की कोशिश के बावजूद नाम याद नहीं आने पर क्षणभर के लिए मैं अचम्भित हुआ किन्तु हवा होने का आनन्द इतना गहरा था कि शरीर का नाम स्मरण न होने के भाव का भी लोप हो गया और मैं शून्यता की स्थिति में बना रहा।

पुनः कुछ देर बाद जब मेरी छोटी–सी बेटी ने हनुमान का चरणस्पर्श किया, मेरी चेतना शरीर में लौट आयी । उस समय भी शरीर का नाम स्मरण नहीं हुआ। तब केवल प्रेम था और केवल हवा थी।

तीसरी बार, क्रियावानों द्वारा गाए जा रहे सुमधुर भजन गीत को सुनकर मेरी चेतना शरीर में लौटी । इस बार चेतना में मेरे नाम के स्मरण की एक झलक मात्र मिली किन्तु वह तत्क्षण लुप्त हो गयी। पुनः हवा में लय की स्थिति हो गई।

पूजा समाप्त होने पर गुरुजी ने टेबुल पर से मुझे बुलाया। किन्तु मेरा शरीर हिला नहीं। शरीर विशेष मुद्रा में बैठे रहने के लिए प्रयासरत नहीं था। वह तो प्रयत्न–शैथिल्य की शान्त–ऊर्जा में था। किसी तरह की थकावट या असुविधा महसूस नहीं हुई। जैसे ही मैंने टेबुल से उठने का प्रयास किया, मेरा केवल एक पैर उठ पाया और फिर मैं गुरुजी के चरणों में गिर पड़ा। उन्होंने मेरी पीठ खूब जोर से थपथपायी।

उस रात, सोने के पहले जब मैं बेड पर गया तब दिन की यादें चेतना में दौड़ने लगी और तभी हनुमान आ गये। चेतना फिर हवा बनकर विस्तृत हो गई।

जब हवा से मेरी चेतना शरीर में लौटी, मन उस अवस्था में हुए अनुभव को याद करने की कोशिश करने लगा। किन्तु उसकी अभिव्यक्ति हेतु मेरे पास कोई शब्द नहीं था। मैं उनके सम्बन्ध में कुछ भी सोच नहीं सका । फिर मैं अपनी मूर्खता पर हँसने लगा क्योंकि मैं उसे अभिव्यक्त करना चाहता था जो अनन्त है, असीम है ।''

बोलो बजरंग बली हनुमान की जय ।